कोर्स:- बी.ए. (भाग- I)

विषय: - राजनीति विज्ञान

ऑनलाइन क्लासनोट्स संख्या: - ०5

(कोरोनोवायरस महामारी के कारण कक्षाओं के नुकसान के बदले में क्लास नोट्स)

(ऑनर्स के साथ-साथ सहायक के पाठ्यक्रम के लिए प्रासंगिक)

भारतीय राजनीतिक प्रणाली में दबाव समूह (Pressure Groups in the Indian Political System) – *Part II*

भारतीय राजनीतिक प्रणाली में दबाव समूहों के प्रकार (Types)

- भारत में बड़ी संख्या में दबाव समूह मौजूद हैं, लेकिन दुर्भाग्यवश वे इंग्लैंड, फ्रांस और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे पश्चिमी देशों की तुलना में विकसित नहीं हैं।
- भारत में विभिन्न प्रकार के दबाव समूह पाए जाते हैं।
- इसे निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:
- सामाजिक और पहचान आधारित समूह (Social and Identity Based groups)
  - ❖ वे धर्म, जाति, जातीयता, भाषा, क्षेत्र आदि जैसे सामुदायिक हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
  - ❖ ये समूह सामाजिक ताने-बाने में अंतर्निहित हैं।
  - ❖ एक व्यक्ति जन्म से ऐसे समूहों का सदस्य होता है।

- इन समूहों का उपयोग सामुदायिक सेवा के लिए या सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक हितों को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।
- राम कृष्ण मिशन, एंग्लो इंडियन क्रिश्चियन एसोसिएशन, जैन सेवा संघ सामुदायिक सेवा समूहों के उदाहरण हैं।
- ये समूह अपने समुदायों के आर्थिक, शैक्षिक और सामाजिक उत्थान में लगे हुए हैं और सरकार पर अन्य समुदायों के किसी पूर्वाग्रह को प्रदर्शित किए बिना इसे पूरा करने के लिए दबाव डाल रहे हैं।
- वे राजनीतिक प्रक्रिया में भाग नहीं लेते हैं और केवल कल्याणकारी कार्यों में संलग्न होते हैं।
- विश्व हिंदू परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अखिल भारतीय सिख छात्र संघ उन समूहों के उदाहरण हैं जो अपने सदस्यों के हितों को प्राप्त करने के लिए सामाजिक और राजनीतिक गोलबंदी का उपयोग करते हैं।
- ये समूह अपने समुदायों के लिए कल्याणकारी कार्य करने के अलावा अनौपचारिक रूप से राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेते हैं।

- व्यापार समूह (Business Groups)
  - व्यापार समूह भारत में दबाव समूह आयोजित किए जाते हैं जो राजनीतिक दलों से स्वतंत्र होते हैं।
  - महत्वपूर्ण व्यावसायिक समूह भारतीय उद्योग परिसंघ (CII), फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स और Ind Industries (FICCI) और एसोसिएटेड चैंबर ऑफ कॉमर्स हैं। फिक्की वास्तव में भारतीय पूंजीवाद का मुख्य प्रवक्ता है।
  - ऐसे दबाव समूहों के माध्यम से, व्यावसायिक घराने अपने विशिष्ट हितों की पैरवी करने के लिए सरकार की कार्यकारी और नौकरशाही शाखा तक पहुंच बनाते हैं, जबकि नीति बनाई जा रही है और इसे लागू करने से पहले।
  - भारत सरकार के हर मंत्रालय में किसी न किसी प्रकार की परामर्शदात्री समिति होती है जहाँ व्यापारिक समूहों का प्रतिनिधित्व होता है।
  - समितियां व्यावसायिक समूहों को आर्थिक नियोजन और लाइसेंसिंग निकायों को प्रभावित करने के लिए विभिन्न प्रकार के दबावों को समाप्त करने का अवसर प्रदान करती हैं।

- बजट तैयार करने से पहले, वित्त मंत्रालय बजट तैयार करने के लिए इन इनपुटों को लेने के लिए इन समूहों से बातचीत करता है।

- श्रमिक समूह (Trade Unions)
    - ट्रेड यूनियन या श्रमिक समूह भारत में महत्वपूर्ण दबाव समूह हैं।
    - वे न केवल स्थानीय रूप से कारखानों में बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी बनते हैं।
    - कम्युनिस्ट आंदोलन के उद्भव ने भारत में ट्रेड यूनियनों की वृद्धि में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
    - उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता से पहले के युग में, ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) की स्थापना 1920 के दशक में कांग्रेस द्वारा की गई थी और बाद में 1929 में साम्यवादी प्रभाव में आ गई।
    - भारत में ट्रेड यूनियन राजनीतिक दलों के साथ निकटता से संबद्ध हैं क्योंकि कई राष्ट्रीय राजनीतिक दल -निर्भरता अवधि को ट्रेड यूनियनों के अपने स्वयं के संघ हैं।
    - इनमें इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस, ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस, हिंद मजदूर सभा और भारतीय व्यापार संघ का केंद्र शामिल हैं।
    - भारतीय राजनीतिक प्रणाली में ट्रेड यूनियन नीति निर्माण के विभिन्न स्तरों पर महत्वपूर्ण शक्ति प्राप्त करते हैं।
    - ऐसा इसलिए है क्योंकि वे अपने शब्दों में मुखर हैं और अपनी मांगों को पूरा करने के लिए अपने कार्यों में बोल्ड हैं।
    - वे अपनी मांगों को पूरा करने के लिए हड़ताल की रणनीति का उपयोग करते हैं जैसे कि वेतन वृद्धि, बोनस, वेतन संरचना में बदलाव आदि।
    - ट्रेड यूनियनों ने श्रमिकों के बीच वर्ग चेतना और वर्ग एकजुटता बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
    - इसका एक उदाहरण सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों में सरकार द्वारा विनिवेश के दौरान प्रदर्शनों का सहारा लेना ट्रेड यूनियनों का है।
- किसान और किसान समूह (Farmers and Peasants Groups)
    - जमींदारी प्रथा का उन्मूलन, पंचायती राज का कार्यान्वयन, भूमि सुधार के उपाय, हरित क्रांति आंदोलन ने भारत में किसान समूहों के उत्थान में योगदान दिया है।
    - उन्होंने 1960 के दशक से प्रभाव प्राप्त किया। हालाँकि वे पहले स्वतंत्रता काल में बने थे।

- 1936 में अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना हुई और 1942 के बाद भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने इस पर नियंत्रण हासिल कर लिया।
- स्वतंत्रता के बाद की अवधि में विभिन्न राजनीतिक दलों को अपने किसान संगठन मिल गए हैं।
- ट्रेड यूनियनों की तरह, कोई भी किसान संगठन पार्टी नियंत्रण से स्वतंत्र नहीं है।
- राज्य स्तर पर, हालांकि, किसान संगठनों को बड़ी हद तक राजनीतिक दलों के समरूप, गैर-राजनीतिक और स्वतंत्र बने हुए हैं।
- कृषक मुख्य रूप से अखिल भारतीय आधार पर क्षेत्रीय या स्थानीय श्रेणी के संघों में अधिक संगठित होते हैं।
- भले ही कुछ महत्वपूर्ण अखिल भारतीय किसान संघ हों जैसे अखिल भारतीय किसान कांग्रेस, अखिल भारतीय किसान कामगार सम्मेलन, अखिल भारतीय किसान संघ, किसान समूह मुख्य रूप से क्षेत्रीय आधार पर आयोजित किए गए हैं।
- उनकी मांगें कृषि उत्पादों की खरीद, उर्वरक सब्सिडी, किरायेदारी अधिकार, बिजली शुल्क आदि से संबंधित हैं।
- पश्चिमी यूपी में भारतीय किसान पार्टी (BKP) सबसे महत्वपूर्ण दबाव समूह माना जाता है। राष्ट्रीय स्तर के दबाव समूहों के गैर-उभरने के लिए भाषा, जाति कारक, कमजोर वित्तीय स्थिति इत्यादि का परस्पर संबंध बहुत जिम्मेदार रहा है।

- छात्र संगठन (Student Organizations)
  - भारत में छात्र संगठन आजादी से पहले भी मौजूद थे।
  - ऑल बंगाल स्टूडेंट्स एसोसिएशन का गठन 1928 में हुआ था।
  - ऑल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन (AISF) की स्थापना 1936 में हुई थी।
  - आजादी के बाद राजनीतिक दल छात्र संगठनों से जुड़े रहे।
  - अखिल भारतीय छात्र कांग्रेस और बाद में भारतीय राष्ट्रीय छात्र संघ (NSUI) कांग्रेस पार्टी से संबद्ध हैं।
  - ऑल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन और स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (SFI), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा नियंत्रित हैं।
  - द रेडिकल स्टूडेंट्स यूनियन, डेमोक्रेटिक स्टूडेंट्स यूनियन, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) आदि सभी विभिन्न राजनीतिक दलों से संबद्ध हैं।

- वे विभिन्न महत्वपूर्ण मुद्दों पर सरकारी नीति को critically analyse करते हैं, उनकी गतिविधियाँ केवल शैक्षिक मुद्दों तक ही सीमित नहीं होती हैं।
- छात्र संगठनों की तरह, शिक्षकों के लिए भी शैक्षिक संस्थानों में संघों का अस्तित्व है जो राजनीतिक दलों से भी जुड़े हुए हैं और ऐसे मुद्दों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो विशेष रूप से उन्हें प्रभावित करते हैं और साथ ही उन मुद्दों को भी प्रभावित करते हैं जो उनके जनादेश से परे हैं।

- अन्य दबाव समूह (Other Pressure Groups)
    - इनमें ऐसे समूह शामिल हैं जो पर्यावरण के संरक्षण, मानवाधिकारों के संरक्षण, महिलाओं के खिलाफ हिंसा को खत्म करने जैसे सामान्य सामाजिक उद्देश्य को आगे बढ़ाते हैं।
    - भारत में संस्थागत समूह भी हैं जो सरकार में काम करने वाले विभिन्न वर्गों द्वारा बनाए जाते हैं, उदाहरण के लिए, सिविल सेवा लॉबी।
    - विशिष्ट उद्देश्य प्राप्त करने और उद्देश्य प्राप्त होने के बाद कार्य करना बंद करने के लिए गठित तदर्थ समूह भी हैं।
    - उदाहरण के लिए समूहों को किसी पुस्तक या गतिविधि पर प्रतिबंध लगाने या किसी विशेष शहर में सरकार द्वारा एक विशेष सेवा प्राप्त करने के लिए बनाया जा सकता है।
    - ऐसे समूह छोटी अवधि के लिए सक्रिय होते हैं। हालांकि अगर वे अपने अस्तित्व का विस्तार करते हैं, तो वे कारण समूहों के रूप में जीवित रहते हैं।

भारत में दबाव समूहों की सीमाएँ (Limitations)

- यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि भारत में, आम तौर पर आम लोग उन्हें प्रभावित करने वाली नीतियों के निर्माण के बारे में जागरूक नहीं हैं। यह उनके वास्तविक सामाजिक जीवन को महसूस करने और प्रभावित करने के बाद है कि उनके खिलाफ आवाज उठाई जाती है। प्रभावित लोग अक्सर संबद्ध समूहों के साथ होते हैं, नीति के खिलाफ उठते हैं और इसके कार्यान्वयन के लिए सरकार के लिए एक विकट स्थिति पैदा करते हैं क्योंकि यह पहले से ही नीति के लिए प्रतिबद्ध है और नीति के संचालन की दिशा में काफी बड़े प्रयास किए गए हैं।

सिंगुर और नंदीग्राम में विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) के मुद्दे पर पश्चिम बंगाल में राजनीति इसका एक उदाहरण है।

- एक और दोष पश्चिम के विकसित देशों में दबाव समूहों के विपरीत है, जहां ये आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक हितों आदि की सुरक्षा के लिए इनका आयोजन किया जाता है, भारत में ये समूह धार्मिक, क्षेत्रीय और जातीय मुद्दों के आसपास आयोजित किए जाते हैं।
- ये चुनावी लाभ के लिए सकारात्मक कार्रवाई में हेरफेर करने की स्थिति पैदा करते हैं क्योंकि कई बार जाति और धर्म के कारक सामाजिक आर्थिक हितों को ग्रहण करते हैं।
- एक और कमी यह है कि संसाधनों की कमी के कारण कई समूहों का जीवन बहुत छोटा है। वे एक स्थिर तरीके से अस्तित्व में आते हैं और तेजी से दूर हो जाते हैं क्योंकि व्यक्तियों के हित को बनाए रखना मुश्किल हो जाता है, शुरू में इन दबाव समूहों को बनाने के लिए आकर्षित किया जाता है। यह भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में दबाव समूहों की वैधता को बाधित करता है।
- इसके अलावा, यदि दबाव समूह अपने हित का राजनीतिकरण करते हैं, तो वे राष्ट्र की शांति और शांति में बाधा डाल सकते हैं। वे पूर्वाग्रहित राजनीतिक हितों को लागू करने के लिए उपकरण बन सकते हैं।

Note (ध्यान दें): -

- प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 150-200 शब्दों में लिखें।
- अपने हाथ से लिखे या टाइप किए गए उत्तर ईमेल पर भेजें या इसे गूगल कक्षाएं (Google Class) पर अपलोड करें।

Questions (प्रश्न): -

1. भारत में विभिन्न प्रकार के दबाव समूह क्या हैं?
2. अपने विशिष्ट हितों को प्राप्त करने के लिए भारत में दबाव समूहों द्वारा उपयोग की जाने वाली रणनीतियों पर चर्चा करें।
3. भारत में दबाव समूहों की कमियों को समझाइए।